ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

समकालीन कविता के वर्तमान संदर्भ

Current References to Contemporary Poetry

Paper Submission: 15/02/2021, Date of Acceptance: 26/02/2021, Date of Publication: 27/02/2021

सुनीता सैनी
सहा. आचार्य,
हिंदी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

समय सापेक्ष व सदेय कविता ही समकालीन कविता है। 1960 के बाद से वर्तमान 20वीं–21वीं सदी की समकालीन कविता के नवीन व परिवर्तित स्वरूप को देखा जा सकता है। बदलते सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश को कवियों ने विस्तृत फलक पर उतारा है। जीवन के संघर्ष, परिवर्तन, समस्या, पीड़ा, परिवर्तित जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति देती कविता श्रेष्ठ व सार्थक को संरक्षित करने को सचेत करती है। सामान्य व्यक्ति की पीड़ा कवि के काव्य में मर्मस्पर्शी संवेदना के साथ अभिव्यक्ति पाती है। इस दृष्टि से आज की समकालीन कविता वैश्विक स्तर पर स्वीकार्य है। वैश्विक मूल्य, वैश्विक संघर्ष, वैश्विक व्यक्तिक पीड़ा का मिला–जुला रूप है समकालीन कविता जो वर्तमान जीवन संदर्भो को अभिव्यक्ति देती है, उसमें प्रश्नाकुलता है तो प्रश्नों के उत्तर भी है।

वेदना के साथ संवेदना भी है, एक मानसिक हलचन है जो स्थिरता की तलाश करती है। भूत का स्मरण है, वर्तमान पर दृष्टि है और इन्हीं दृष्टियों को समेटने का सार्थक प्रयास आधुनिक संदर्भो के साथ आज की समकालीन कविता का लक्ष्य है। जिसमें समझ कर ही नवीन जीवन निर्माण संभव है।

Time relative and poetry is contemporary poetry. Since 1960 one can see the new and changed form of contemporary poetry of the present 20th-21st century. Poets have brought the changing social, economic, religious, cultural environment on a wide scale. The poem gives expression to the struggles, changes, problems, pains, changed life values of life and warns to preserve the best and meaningful. The suffering of a normal person finds expression in the poet's poetic poignant sensations. In this context, today's contemporary poetry is globally accepted. Global values, global conflicts, global personal suffering is a mixed form of contemporary poetry which gives expression to current life contexts, there is a question in it and there are answers to questions. Vedana is also accompanied by sensation, a mental affliction that seeks stability. It is a remembrance of the past, a vision of the present, and a meaningful attempt to encapsulate these visions is the goal of today's contemporary poetry with modern references. In which creation of new life is possible only by understanding.

मुख्य शब्द : समकालीन, कविता वर्तमान मूल्य/संदर्भ बाजारवाद, अपसंस्कृति अजनबीपन, वैश्विकरण, स्त्री–विमर्श।

Contemporary, Poetry Current Value / Context Marketism, Upscale Strangeness, Globalization, Femininity.

प्रस्तावना

समकालीन कविता काल एवं समय सापेक्ष होती है। वह अपने समय के जीवन व जगत की परिस्थितियों, भोगे हुए आत्म संघर्षो, संवेदना, चिंता विद्रोहों परिवर्तित होते सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण करती है। उसके केन्द्र में सामान्य मानव होता है। 1960 से वर्तमान तक समकालीन कविता मानवीय संवेदनाओं मानसिक प्रश्नों की अभिव्यक्ति गहनाता से कर रही है। वर्तमान में तीव्रता से बढ़ते वैश्वीकरण ने बाजारवाद, अपसंस्कृति व नयी सौंदर्यानुभूतियों को जन्म दिया है। मानव के भोगे हुए तनावों, संघर्षो, विश्वासों, निराशाओं नवीन लोकतांत्रिक मूल्यों की पड़ताल वर्तमान समकालीन कविता करती है। आम जन की इन्हीं नवीन दिग्भ्रमित स्थितियों से जुड़े प्रश्नों को लेकर वर्तमान समकालीन कविता के स्वरूप का निर्माण हुआ है। 20वीं शताब्दी के बाद की कविताओं में समकालीन कविता के इस नये रूप की अभिव्यक्ति होती है।

अध्ययन का उददेश्य

परिवेश जनित परिवर्तनों से नित नवीन रूप में उभर रहे भौतिक व मानसिक जगत को क्या आज की कविता अपने में समेटे हैं? वश्विक पटल पर उभर रही समस्याओं व चुनौतियों के कारणों व समाधानों के अन्वेषण की दिशा

में उसका प्रयास कितना सार्थक है? कितना गहरा व सूक्ष्म है वर्तमान कविता का संवेदन? मनुष्यता के सर्वोतम के संरक्षण के अपने उत्तरदायित्व का क्या वह ईमानदारी से निर्वहन कर रही है? समकालीन कविता के वर्तमान जीवन संदर्भो की तलाश ही इस अध्ययन का मूल लक्ष्य रहा है।

'समकालीन' अर्थ व स्वरूप

समकालीन शब्द अंग्रेजी के कन्टेम्परेरी का हिन्दी पर्याय है, जिसका तात्पर्य 'एक समय में या काल में होने या रहने वाला' लिया जाता है। इसके अर्थ को विभिन्न विद्वानों व शब्दकोंशों ने अभिव्यक्त किया है। मानक हिन्दी शब्द कोश के अनुसार ''जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे है। एक ही समय में रहने वाले।1

डॉ. हुकुमचंद राजपाल 'समकालीन के सम्बन्ध में कहते हैं'' समकालीन का संबंध काल विशेष के वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के वर्तमान से रहा है।2

डॉ. परमानंद श्रीवास्तव समकालीनता को और भी गहराई से अभिव्यक्ति देते कहते है ''समकालीनता सिर्फ मुहावरा नहीं है, बल्कि आज की संश्लिष्ट वास्तविकता में प्रवेश करने का संकल्प या प्रतिबद्ध जीवन दृष्टि है।''3 अर्थात् समकालीन जीवनाभिव्यक्ति ही 'समकालीनता' है।

रोहिताश्व के अनुसार – ''समकालीन भावना के अन्तर्गत ही वैश्विक चिंतन, सृजन का दाय हमारा दाय बन जाता है''4 अर्थात् समकालीनता देश निरपेक्ष है, वैश्विक और मूल्याधारित है।

विश्वम्भर नाथ उपाध्याय के अनुसार ''सचेतन समकालीन व्यक्ति का कालबोध, देशबोध, व्यक्ति और समूहबोध संग्रथित होता है।''5 अर्थात् ये भूत, भविष्य व वर्तमान के प्रवाह को समकालीनता मानते हैं।

समकालीन कविता के संदर्भो के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि वह वर्तमान में जीते सामान्य मानव के संघर्ष, बौखलाहट, संत्रास के चित्रण के साथ वैविध्यमान जीवन की वैश्विक अभिव्यक्ति है। इस संबंध में डॉ. वी. सत्यवती कहती है'' समकालीन कविता आम आदमी के जीवन संघर्षो विकृतियों, विसंगतियों, विषमताओं और विद्रूपताओं की खुली पहचान है।''6

समकालीन कविता के स्वरूप को समझने के लिए लीलाधर जंगूड़ी का यह कथन महत्वपूर्ण है कि ''कविता अपने समय की समझ से पैदा होती हैं ..... और हर काल की कविता अपनी समझ अपना सौंदर्य और अपना बोध स्वयं रखती है।''7 आधुनिक समय की (20वीं, 21वीं सदी) समकालीन कविता उपरोक्त सभी प्रवृत्तियों से युक्त है। बदलते परिवेश की परिवर्तित स्थितियों के चित्र गहन संवेदना के साथ आज की समकालीन कविता में देखे जा सकते है।

कुंवर नारायण का यह कथन समकालीन कविता के आधुनिक संदर्भो को सटीक अभिव्यक्ति देता है कि कविता यथार्थ को नजदीक से देखती मगर दूर की सोचती है। वह एक बारीक मगर जरूरी फर्क करती है। जीवन यथार्थ और जीवन–सत्य के बीच दुनिया जैसी है और जैसी उसे होना चाहिए के बीच कहीं पर एक लगातार बैचेनी है। इसी बैचेनी और आदर्श की तलाश वर्तमान समकालीन कविता का कवि करता है।

वर्तमान समकालीन कविता के जीवन संदीर्ा 21वीं सदी में तेजी से बदलते आन्तरिक व ब्राह्य परिवेश पर आज का समकालीन कवि अपनी लेखनी की गति नित्य परिवर्तित करता समय के साथ जीवन को अभिव्यक्ति दे रहा है। जीवन, समाज व विश्व का प्रतिपल व बदलता स्वरूप उसके काव्य में अभिव्यक्ति पा रहा है। हर समस्या, हर समाधान, हर परिवर्तन पर वह तीक्ष्ण दृष्टि डाल गहन संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दे रहा है।

अपने को चेतन कहने वाला शिक्षित व्यक्ति अनजाने ही विदेशी सभ्यता संस्कृति का गुलाम बनता जा रहा है, इसकी अभिव्यक्ति इला कुमार की कविता करती हैं।

नव जागरित व्यक्तियों की जमात जब
अपने आस–पास के लोगों की उपस्थिति को नकार
विदेशी अकेलेपन का स्वांग भरती है
नई सदी की दहलीज पर उगे
दीमकों की बस्ती के बीच दिग्भ्रमित
मन दहल जाता है
यह कैसी गुलाम विरासत?''7

यह गुलाम विरासत ही हमारी संस्कृति के ह्रास का कारण बनती जा रही है।

''सामाजिक अनुशासन भी भूल गया है
सभ्यता की परिभाषा
शायद
मानवीय रिश्तों की सुचिता को
ग्रहण लगा गया है, अपसंस्कृति की छाया का''8

आधुनिकता की यह अपसंस्कृति पारस्परिक संबंधों में एक अन्तराल उत्पन्न कर रही है, उसे समकालीन कविता अभिव्यक्ति देती है –

''घर आँगन है सूने–सूने
चौपालों पर घोर उदासी
संकेतों की काया महकी
संवेदन ले रहे उबासी
संवादों के रंग–मंच पर
बरस रहे चुप्पी के पत्थर।''9

इस चुप्पी व एकाकीपन से व्यक्ति तभी बाहर आ सकता है, जब वह ह्रदय को समस्त बंधनों से मुक्त कर परिवेश से जुड़े।

बहुत ताकत लगी
जंग लगे कपाटों को खोलने में
खुलते ही मुझे लगा कि
मैं एक नई दुनिया में हूँ
और जिंदा भी हूँ।''10

वैश्विकरण और बढ़ता बाजारवाद आज के जीवन की दो सच्चाईयाँ है जो जीवन को मूलतः परिवर्तित कर रही है। बाजारवाद व्यक्ति को तनाव, कुंठा, आत्म–संघर्ष, चिंता व संघर्ष पूर्ण जीवन की ओर धकेल रहा है, स्थिति यह है कि –

''यदि आप समर्थ है
तो आपका स्वागत है उस वैश्विक गाँव में

जो मध्ययुगीन किले की तरह खूबसूरत बनाया जा रहा है
अन्यथा आप स्वतंत्र है।
अपनी सदी की जाहिल कुरूप दुनिया में रहने को
बाजार वहाँ भी है।''11

आधुनिकता ने अजनबीपन, एकाकीपन को जन्म दिया और उसी से व्यक्तिवाद, निराशावाद आज के जीवन का अंग बन गये।

''ऐसी कुछ हवा चली
चंदन वन झूलसा
रिश्तों का
अपनापन टूट गया पुल सा
अपनों के बीच बसे
मिलकर भी अनमिले।'12

इस स्थिति से परिचित ; कवि और व्यक्ति आत्मिक रूप से इस पीड़ा की अनुभूति भी करता है कि वह अपने अस्तित्व की तलाश में खुद से और अपने प्राकृतिक परिवेश से कितना कट गया है–

''अपने अस्तित्व की खोज में
अपनी ही काया से
विस्थापित होने का आभास
आघात करता है भीतर
कही पर
हर पल देखता रहता है
दिल बेसब्री में।''13

इस स्थिति से बाहर आना आवश्यक है अन्यथा मनुष्यता पर खतरा है, यही संदेश देती है। समकालीन कविता –

अब तो तैयारी है महाशून्य के अंधेरे में
आगे बढ़ते चले जाने की
''काश हमारी आत्मा हमसे कुछ दूर
आकश की नीली झील में
तैरते पक्षियों की आत्मा में
प्रवेश कर
एक उपनिवेश बना पाती''14

उपर्युक्त स्थिति के उत्पन्न होने का कारण है प्रकृति से दूरी। यांत्रिकता व शहरीकरण ने व्यक्ति को स्वयं के कोटर में जितना बंद किया, वह उतना ही सब से कटता गया –

''इस ग्लोबल युग में
गौरैया और उनके बच्चों के कलरव को
कोई स्थान नहीं
अब यूट्यूब पर मधुर संगीत सुना करते है
ड्रांईग रूप को साफ–सुथरा रखे हुए।15

प्रकृति से अलगाव ही प्रदूषण जैसी वैश्विक समस्या का भी मूल है। जिस पर समकालीन कवि की दृष्टि है –

जब लाइट बुझती है तो जेनरेटर जीता है
चिमनी जिंदगी पाती है
काला धुँआ फेंफड़ों से निकलता है....
एक पल मेरी साँस बंद हो जाती है
इसी उधेड़पन में कि –
पहले धुँआ रूकेगा या जिंदगी उड़ेगी।''16

विडम्बना है हमारे संवेदना–शून्य राजनेता,

सामान्य व्यक्ति की व्यथा से अपरिचित अपने स्वार्थो की पूर्ति में देश की सम्प्रभुता के लिए खतरा बने हैं –

''हुजूम लगा है
किस्म–किस्म के रथों का
जनपथ पर
इस अद्‌भुत रथ में
घोड़ा नहीं जुता है
जुता है हिंसक भैंसे का जिन्न
जो लाया गया समय की उस गुफा से
जब चलता था यहाँ अँधेरे का राज।''17

वर्तमान की समकालीन कविता विश्व पर मंडराते युद्ध की विभिषिका पर भी दृष्टि डालती है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी नवीन युद्ध तकनीकों को विकसित कर रहा है जो मनुष्य के विनाश का सूचक है :–

जन हत्यारे कर रहे हैं खुद को तैयार
वे निकल चुके है अपने दिमागों से बाहर
खुले में खोज रहे हैं अपनी सुरक्षा
वे हमें मारेंगे, खुद को सुरक्षित कर
शायद अंतरिक्षों की ओर प्रयाण कर।18

राजनीतिक कुचकों का खुलासा करने वाले संचार माध्यम भी आज स्वतंत्र नहीं है, बिगड़ती न्याय प्रणाली ने सभी में भयव्याप्त कर दिया है

सत्य को बोलना व लिखना बहुत मुश्किल है, यह आज के समाज की स्थिति है, जिससे समकालीन कवि अभिव्यक्त करता है–

''कितना मुश्किल है
इस दौर में झूठ के खिलाफ
दहाड़ते आतंक के बीच
फटकार कर सच बोलना।''19

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा खतरे में है और यह स्थिति सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए विनाशकारी है।

वे जब कुछ लिख रहे होते हैं
लिखते–लिखते डर जाते हैं अचानक
उन्हें पता है कि दीवारों के कान होते हैं
दीवारों, दरवाजों, रोशनदारों से डरते हैं
वे डरते–डरते ही काम करते है।''20

आज की समकालीन कविता केवल स्थितियों पर प्रकाश नहीं डालती व्यक्ति के मन के प्रश्नों को भी उजागर करती है ओर ये प्रश्न समूची पृथ्वी के मानव मन के वैश्विक प्रश्न हैं –

''पूछुंगा किसी आत्मीय से कि कैसे
सीख लेते हैं अधिकांश आत्मीय
अपनों से अपना दुख छिपाने की यह
अच्छी और ईमानदार आदिम कला।''21

यह भी एक सार्वभौतिक प्रश्न हे कि –
इतने समर्पण और सक्रियता के बावजूद
क्यों अकेले हैं ये सम्पन्न युवा
कैसे अवसाद के शिकार हो जाते है
सारी सुविधाओं के बावजूद।'' 22

स्त्री विमर्श से जुड़े प्रश्न जो वैश्विक हैं समकालीन कविता के मूल में हैं–

''असामान्य है समाज का स्वीकार लेना
एक ऐसी स्त्री को, जो सभी का पेट भरते हुए
नहीं बेल पाती है सही आकार की रोटी और
रसोई के बाहर आमीबा नजर
आती है स्त्री''23

निष्कर्ष

कविता जब अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता और उसमें निहितार्थ को अर्जित कर चुनौतियों के निदान व प्रतिकार को स्वीकार करती है तभी वह सार्थक है यही उत्तरदायित्व वर्तमान कवि समकालीन कविता में कर रहे हैं। वे सामान्य व्यक्ति का परिवेश से परिचय भी करवाते हैं और सचेत भी करते है कि परिवेश में सात्विक परिवर्तन आवश्यक है, बौद्धिकता को मानवीयता पर हावी न होने दें अन्यथा सिवाय पछतावें के कुछ भी हासिल नहीं होगा –

यह रह जायेगा कहने को
कि हम छले गये समय के हाथों
हम तो भूल ही जायेंगें
पंखुड़ियों को दमकती ओजस्विता को
और तितलियाँ पकड़ने वाले हाथों में
लगे रह गए पीले रंग के कणों को''24

श्रेष्ठतम, सर्वोतम, सार्वभौतिक मूल्यों के संरक्षण का प्रयास ही समकालीन कविता का देय है। विस्तृत होते परिवेश के साथ समकालीन कविता का फलक विस्तार व गंभीरता लेते हुए चेतन, जीवन–मूल्य गर्भित जीवन–रचना का प्रयास करता है। इस दृष्टि से 21वीं सदी की समकालीन कविता महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रमाणिक हिन्दी कोश, छठा संस्करण, संपादक बदरीनाथ कपूर पृ. 827*
2. *समकालीन बोध और धूमिल काव्य, सम्पादक–हुकुमचंद राजपाल, पृ. 11*
3. *कल्पना पत्रिका, परमानंद श्रीवास्तव, पृ. 14*
4. *समकालीन कविता में सौंदर्य बोध, रोहिताश्व, पृ. 15–16*
5. *समकालीन सिद्धान्त और साहित्य, विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, पृ. 14*
6. *समकालीन कविता में व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक व्यंग्य – डॉ.पी. सत्यवती, पृ. 7*
7. *आवेग – लीलाधर जंगूड़ी, पृ. 13*
8. *अच्छा है, कविता इला कुमार, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक – 141*
9. *बाजार : एक हलफनामा, राजेन्द्र निरांश, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–190*
10. *ढ़ाई अक्षर, कविता कृष्ण शलम, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–186*
11. *नई दुनिया, रामकुमार आजेय, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–186*
12. *बाजार के बारे में कुछ विचार, राकेश रोहित, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–143*
13. *नवजीत, देवेन्द्र शर्मा इंदु समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–141*
14. *मुसाफिर की तरह, वैद्यनाथ उपाध्याय, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक –141*
15. *यात्रा, सीताराम महापात्र, अनु. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र*
16. *नया अभियान, आलोक गुप्ता, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–190*
17. *खिड़की से कबूतरों का उड़ना देखा, अमिताभ विक्रम द्विवेदी समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–190*
18. *रथ–हरेकृष्ण, अनु. पंकज पाराशर, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–186*
19. *लड़ते–लड़ते, गंगाप्रसाद विमल. समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–186*
20. *कितना मुश्किल है, अशोक सिंह, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक – 186*
21. *'गुप्त' हरिओम राजोरिया समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–143*
22. *पूछूँगा किसी आत्मीय से – कैलाश मनहर समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–143*
23. *बाजार– एक हलफनामा – राजेश निरांश, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–190*
24. *आकार–सुलोचना वर्मा, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–190*
25. *परास्त, हरिओम राजोरिया, समकालीन भारतीय साहित्य, अंक–143*